पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय एवं पर्ड्यू विश्वविद्यालय, अमेरिका के बीच आशय पत्र पर हस्ताक्षर

पंतनगर। 6 अप्रैल 2026। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर तथा पर्ड्यू विश्वविद्यालय, अमेरिका के बीच शिक्षा, अनुसंधान एवं शैक्षणिक आदान प्रदान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते का उद्देश्य उद्यानिकी एवं संबंधित विषयों में दोनों संस्थानों के बीच सहयोगात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना है।

यह आशय पत्र पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह के दौरान कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान, कुलसचिव डा. दीपा विनय, विश्वविद्यालय के अधिष्ठाताओं, निदेशकों एवं संकाय सदस्यों की उपस्थिति में औपचारिक रूप से आदान प्रदान किया गया। यह आशय पत्र पर्ड्यू विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर एवं उद्यानिकी तथा लैंडस्केप आर्किटेक्चर विभाग तथा गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, उद्यानिकी विभाग एवं सब्जी विज्ञान विभाग के बीच संपादित किया गया है। समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान अतिथि व्याख्यान, स्नातकोत्तर छात्रों का संयुक्त मार्गदर्शन, संकाय एवं छात्र आदान – प्रदान, संयुक्त अनुसंधान परियोजनाएँ, कौशल उन्नयन हेतु भ्रमण तथा प्रयोगशाला एवं क्षेत्रीय सुविधाओं के साझा उपयोग जैसी सहयोगात्मक शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देंगे। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषण एजेंसियों के सहयोग से संयुक्त प्रकाशन, सम्मेलन, कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन को भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि यह साझेदारी छात्रों एवं वैज्ञानिकों के लिए वैश्विक खुलासे के नए अवसर प्रदान करेगी, उद्यानिकी विज्ञान में उन्नत अनुसंधान को सुदृढ़ करेगी तथा कृषि में आधुनिक प्रौद्योगिकियों के अपनाने को बढ़ावा देगी। उन्होंने दोनों संस्थानों के नोडल अधिकारियों डा. रंजन के. श्रीवास्तव, प्रोफेसर, उद्यानिकी तथा डा. कृष्णा नेमाली, एसोसिएट प्रोफेसर, पर्ड्यू विश्वविद्यालय को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से विश्वविद्यालय की वैश्विक पहचान और शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा मिलेगा। यह आशय पत्र पाँच वर्षों तक प्रभावी रहेगा तथा परस्पर सहमति से निर्धारित प्राथमिक क्षेत्रों में दोनों संस्थानों के बीच विशिष्ट सहयोगात्मक गतिविधियों के विकास हेतु एक रूप रेखा के रूप में कार्य करेगा।